School of Humanities

Certificate

I hereby declare that the short synopsis **"अवध क्षेत्र की हिन्दी आत्मकथाओं में अभिव्यक्त अवध का लोकजीवन"** being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of philosophy in **HINDI** under School of Humanities of U.P. Rajarshi Random Open University, Prayagraj during the academic year 2023 - 24.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. Ruchi Bajpai and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the sort synopsis is plagiarism - Free and the report has been submitted.

Indra Bhan

En. No. - 2301302

Research Supervisor :-

Prof. Ruchi Bajpai (Faculty of Hindi)

Prof. Satyapal Tiwari

Director of School of Humanities

28/07/25

Prof. P.K. Pandey (Director, R & D Cell)

"अवध क्षेत्र की हिन्दी आत्मकथाओं में अभिव्यक्त अवध का लोकजीवन"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI

to

U. P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

Indra Bhan

End. No. - 2301302

Under the Supervision of

Prof. Ruchi Bajpai

Faculty of Hindi

School of Humanities

U.P. Rajarshi Tandon Open University

Shantipurm (Sector - F), Phaphamau, Prayagraj - 211021

इन्द्रभान सिंह यादव

सार

अवध की हिन्दी आत्मकथाओं में आए अवध के लोकजीवन को प्रस्तुत शोधप्रबन्ध मे विश्लेषित किया गया है। इस शोधप्रबन्ध के अन्तगर्त पाण्डेय बेचनशर्मा 'उग्र' की 'अपनी खबर', हरिवंशराय 'बच्चन' की 'क्या भूलू क्या याद करूँ', 'नीड का निर्माण फिर', 'बसेरे से दूर', 'दसद्वार से सोपान तक', डॉ. रामविलास शर्मा की 'घर की बात', 'मुंडेर पर सूरज', 'देर सबेर', 'आपस की बात', 'अपनी धरती अपने लोग', माता प्रसाद की 'झोपड़ी से राजभवन तक', रूपनारायण सोनकर की 'नागफनी', 'मेरे जीवन की बाईबिल', विश्वनाथ त्रिपाठी की 'नंगातलाई का गाँव', 'बिसनाथ का बलरामपुर', अखिलेश की ' वह जो यथार्थ था', 'अक्स' आदि को सम्मिलित किया गया है। इन आत्मकथाओं के ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक पहलुओं के साथ ही साथ उनके लोकचरित्रों, लोकसंस्कारों, लोकसाहित्यों, लोकसंस्कृतियों, लोकव्यंजनों, किसानो एवं श्रमिको के जीवन, व्यापार तथा प्रवासन आदि विषयों पर गहन एवं गम्भीर भावो का उल्लेख किया गया है।

Keyword :- लोकजीवन, ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक, लोकचरित्र, लोकसंस्कार, लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति, लोकव्यंजन, प्रवासन।

CONTENTS

S. No.	Description	Page No.
1.	Introduction.	5 - 6
2.	Literature Review.	7
3.	Description Broad Area.	8
4.	Objectives of the Study.	8
5.	Research Methodology.	8
6.	Expected outcome of the Research.	9
References.		9-11
Plagiarism Report		

1. प्रस्तावना

अवध प्रांत उत्तर - भारत का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, पौराणिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र रहा है जो एक बड़े भू - भाग को अपने आप मे समेटे हुए है। इसका सीमा - विस्तार पूर्व मे बिहार प्रांत के भोजपुर जनपद से पश्चिम मे कन्नौज जनपद की सीमाओं तक और उत्तर मे उत्तराखण्ड प्रांत के कुमाऊं मण्डल की सीमाओ से दक्षिण मे मध्य प्रदेश के बघेलखण्ड की सीमाओं तक विस्तृत है। इस भू - भाग की सीमा मे लखनऊ, फ़ैजाबाद, गोण्डा, बहराइच, बस्ती, बलरामपुर, बाराबंकी, रायबरेली, सिद्धार्थनगर, अम्बेडकरनगर, सुल्तानपुर, जौनपुर, प्रतापगढ, श्रावस्ती, फ़तेहपुर, कानपुर, सीतापुर, लखीमपुर - खीरी, उन्नाव, हरदोई, कौशाम्बी, प्रयागराज, चित्रकूटधाम, संतरविदासनगर, मिर्जापुर आदि जिले आते है।

अवध की ऐतिहासिक - सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पूरे भारत मे महत्वपूर्ण स्थान रखती है। अवध की ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक संरचना का अध्ययन - अनुसंधान न केवल अवध अंचल, अपितु समूचे भारत के लिए विशिष्ट है। एक ओर अवध की उल्लासमय संस्कृति और पौराणिक महत्ता सात - समंदर पार तक गुंजायमान हो रही है; वहीं स्त्री, दलित एवं विकलांग जैसे समाज के संवेदनशील वर्गों के प्रति अनाचार - अत्याचार और भेद - भाव पूर्ण व्यवहार हमे झकझोरता है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में अकाल्पनिक विधाओं जैसे - आत्मकथा आदि के विषय मे यह उक्ति अधिक सटीक है।

हिन्दी आत्मकथा का प्रारम्भ १६४१ ई. मे पद्यात्मक रूप मे लिखित बनारसीदास जैन की 'अर्धकथानक' से होती है। गद्यात्मक रूप मे इस विधा का श्री गणेश भारतेन्दु - युग मे भारतेन्दु की आत्मकथात्मक कृति 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' से हुई। इनके अलावा सुधाकर द्विवेदी की 'रामकहानी' अम्बिकादत्त व्यास की 'निजवृत्तांत'। द्विवेदी - युग मे बाबू श्यामसुन्दरदास की 'मेरी आत्मकहानी' हिन्दी भाषा और साहित्य के पूरे युग को प्रतिबिम्बित करती है। प्रेमचन्द ने हंस का आत्मकथात्मक अंक निकालकर इस विधा के उभरते महत्व को रेखांकित किया। साहित्य मे अस्मितावादी विमर्शों के दौर मे दलित, स्त्री, किन्नर, वेश्यावृत्ति का दंश झेलती स्त्रियाँ, आदिवासी और अनेकानेक समाज के संवेदनशील वर्गों से आत्मकथाएं आ रही है। ये आत्मकथाएं न केवल साहित्य, अपितु अपनी सामाजिक - सांस्कृतिक संरचना को नये दृष्टि से समझने और बदलने की मांग करती है।

अवध क्षेत्र की आत्मकथाओं में अवध का जीवन, उसके संघर्ष और स्वप्न अधिक चटख रंग मे उतरे है। अवध क्षेत्र के दो महान व्यक्तित्व तुलसी और जायसी ने अपनी आपबीती को संकेत मे लिखा है। एक ओर माता हुलसी की गोद से असामयिक त्यक्त **'बारे ते ललात बिललात द्वार - द्वार'** दीन बाल भिखमंगे तुलसी को चार चने, चार फल का मार्मिक अनुभव कराते है; वही एक आँख और एक कान **(मूहमद बाई दिसि तजा, इक सरवन इक आंखि)** की विकलांगता के मारे जायसी सामंती मानसिकता की भुक्तभोगी रहे। इसमे केवल इन महानुभावों की व्यथा - कथा न होकर समूचे निर्धनो, विकलांगो और उपेक्षितों की पीड़ा प्रकट हुई है। आगे आधुनिक काल मे कई सर्जनात्मक और बेबाक आत्मकथाएं आयी, जिसमे पाणडेय बेचन शर्मा 'उग्र', हरिवंशराय 'बच्चन', डॉ. रामविलास शर्मा, माता प्रसाद, रूपनारायण सोनकर, विश्वनाथ त्रिपाठी, अखिलेश आदि सम्मिलित है

अवध क्षेत्र की आत्म कथाओं मे लोकजीवन, उनके रस, रंग व उल्लास, शोषण सत्ता के प्रति आक्रोश व प्रतिरोध, अवध क्षेत्र की आत्मकथाओं के शिल्प गठन का अध्ययन और अनुसंधान न केवल अपने - आप मे रोचक है; अपितु स्वर्णिम भविष्य के निर्माण मे अत्यन्त उपयोगी भी होगा। एक ओर लोकजीवन सामूहिकता, सहयोग की भावना, पर्यावरण प्रेम, उत्सव एवं अनेक पर्व जैसे सकारात्मक पक्ष है; वही जाति, धर्म, लिंग, भाषा, शारीरिक बनावट, धनी ओर निर्धन के आधार पर अनेक भेदभाव की परते भी विद्यमान है। लोकजीवन क्रूर शोषणतंत्र का सामना अपनी लोकगीतों, लोकनाटकों, कहावतों आदि के माध्यम से करता है और सहूलियत भरे भविष्य का सपना देखता है। आत्मकथाओं की इन शिल्पगत विशेषताओं के पक्षों को भी विवेचन मे प्रमुखता प्रदान की जाएगी, जिसकी झलक अवध की आत्मकथाओं मे पर्याप्त मात्रा मे पायी जाती है। पूर्वाग्रह रहित विवेक के आधार पर उस समृद्ध प्रगतिशील संस्कृति और उस **'कुछ बात'** की खोज करने की आवश्यकता है, जो विश्व की रोम और यूनान जैसी हस्तियों के मिटने के पश्चात भी हमारी हस्ती के न मिटने का लकारण रही है। प्रस्तुत शोध इसकी खोज का एक प्रयास है।

अखण्डप्रताप सिंह यादव

2. साहित्य समीक्षा

अवध क्षेत्र की हिन्दी आत्मकथाओं मे लोकजीवन को केन्द्र मे रखकर अभी तक किसी के द्वारा शोध कार्य करने का प्रयास नही किया गया है। अतः इस विषय पर कार्य करना परमावश्यक है। पूर्व मे किए गए कुछ संबन्धित शोधकार्यों का विवरण निम्नवत है -

1. अवध की लोकसंस्कृति और पद्मावत, घनश्याम, पी-एच. डी., जवाहरलाल नेहरू लिश्वविद्यालय, नई दिल्ली,1977

2. 1857 का विद्रोह और अवध का लोकजीवन, अजय कुमार वर्मा, एम. फिल., जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2006

3. हिन्दी के साहित्यकारों का आत्मकथा साहित्यः समीक्षात्मक आकलन, श्रीमती गायत्री औचित्य, पी-एच. डी., कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, 2015

4. मध्यकालीन हिन्दी साहित्य और लोक परम्पराओं का अध्ययन, लेखा कुमारी, पी- एच. डी., दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2016

3. व्यापक क्षेत्र का विवरण

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध मे आधारग्रंथ के रूप मे अवध क्षेत्र की हिन्दी आत्मकथाओं को लिया गया है किन्तु इनके अतिरिक्त सुदूर गाँव मे फैले उन अनपढ, अशिक्षित, किसान, श्रमिक, स्त्रियों के गीत, संगीतों, लोकनाट्यों, लोकमूल्यो, लोकमान्यताएं, लोकोक्तियो, मुहावरों, कहावतों एवं संवादों को भी सम्मिलित किया जाएगा और शिष्टजीवन से इनकी तुलना को भी स्थान दिया जाएगा, जो विषय को रोचक बनाने के साथ ही साथ उसे व्यापक सरोकारों से जोड़ने का कार्य करेगा । इसप्रकार समाज के सभी वर्गों के लोगों मे परस्पर उदारता एवं समरसता की भावना का विकास होगा।

4.शोध का उद्देश्य

1. आत्मकथाओं के माध्यम से अवध की प्रकृति, जिजिविषा व विशिष्टता का अध्ययन करना।

2. अवधी जनजीवन के कठोर यथार्थ, संघर्ष व परिवर्तन की आकांक्षा का अध्ययन करना।

3. शोषणकारी व्यवस्था, उसके शोषण के प्रकार व लोकजीवन के प्रतिरोध का अध्ययन करना।

4. अवध की अन्य लोकसंस्कृतियों से तुलना व विशिष्टता का अध्ययन करना।

5. अवध के लोगों के जीवन संघर्षों, आकांक्षाओं एवं प्रतिरोधी स्वरों को साहित्य के धरातल पर स्थापित करके उनकी ठोस एवं धरातलीय वस्तु - स्थितर से परिचित कराना।

5. शोध पद्धति

प्रस्तावित शोधप्रबन्ध मे अवध क्षेत्र के सभी वर्ग के लोगों को सम्मिलित किया जाएगा। समाज के विभिन्न वर्गो के जीवन को प्रभावित करने वाले ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं आर्थिक आदि कारण होते है। अतः यहाँ पर ऐतिहासिक, विवरणात्मक एवं वर्णात्मक आदि प्रविधियों का उपयोग किया जाएगा।

6. Expected Outcome of the Research

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध अवध क्षेत्र की हिन्दी आत्मकथाओं के माध्यम से समाज के सभी वर्गों को सम्मिलित किया गया है जिसमे समाज का उच्च वर्ग एवं वर्ण के साथ ही साथ निम्न वर्ग एवं वर्ण भी है। अतः इन दोनों की खूबिया एवं खामियों का आना स्वभाविक है। इन खूबियों एवं खामियों का साहित्य एवं समाज के सम्मुख प्रकट होने से और लोगों के अध्ययन - अध्यापन से समाज के लोगों मे प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सकारात्मक भाव का विकास होगा और लोगों मे वसुधैव कुटुम्बकम की भावना का विकास होगा जिससे सभी एक दूसरे के साथ प्रेम एवं सौहार्द के अपना जीवन जी सकेगे ऐसी मेरी अपेक्षा है।

References :-

मूल ग्रंथ :-

1.' उग्र' पाण्डेय बेचन शर्मा, अपनी खबर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1960

2. 'बच्चन' हरिवंशराय, क्या भूलू क्या याद करूँ(1969), नीड का निर्माण फिर(1970), बसेरे से दूर(1978), दसद्वार से सोपान तक(1985), राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली

3. शर्मा, रामविलास, घर की बात(1983), मुंडेर पर सूरज, देर - सबेर, आपस की बात, अपनी धरती अपने लोग(1996), किताबघर, नई दिल्ली

4. प्रसाद, माता, झोपड़ी से राजभवन तक, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002

5. सोनकर, रूपनारायण, नागफनी, मेरे जीवन की बाईबिल, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007

6. त्रिपाठी, विश्वनाथ, नंगातलाई का गाँव(2012), बिसनाथ का बलरामपुर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

7. अखिलेश, वह जो यथार्थ था, अक्स, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015

हनुमान सिंह यादव

सहायक ग्रंथ :-

1. रोहतगी, डॉ. सरोजनी, अवधी लोक साहित्य, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली,1971

2. उपाध्याय, कृष्णदेव, अवधी लोकगीत, साहित्य भवन प्रकाशन, इलाहाबाद, 1976

3. माधव, नीरजा, हिन्दी साहित्य का ओझल नारी इतिहास, सामयिक प्रकाशन, 2012

4. सिंह, बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013

5. पाण्डेय, मैनेजर, भारतीय समाज मे प्रतिरोध की परम्परा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015

6. कुशवाहा, सुभाषचन्द्र, अवध का किसान विद्रोह(1920 - 22), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018

7. मिश्र, शिवकुमार, भक्तिकाव्य और लोकजीवन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

8. शर्मा, रामविलास, लोकजीवन और साहित्य, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

9. सिंह, कमलेश, हिन्दी आत्मकथाः स्वरूप और साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

पत्र - पत्रिकाएं

1.अखिलेश, तद्भव(अर्धवार्षिक), लखनऊ

2.त्रिपाठी, अमरेन्द्र, अवधी कै अरघान(ई. पत्रिका)।

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

---

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Indrabhan Yadav
Title	अवध क्षेत्र की हिन्दी आत्मकथाओं मे अभिव्यक्त अवध का लोकजीवन
Paper/Submission ID	4139811
Submitted by	rjmauryauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-07-28 14:18:03
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **1%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

DrillBit Similarity Report

1	4	A	A-Satisfactory (0-10%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	B-Upgrade (11-40%)
			C-Poor (41-60%)
			D-Unacceptable (61-100%)

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
2	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
3	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
4	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication